इकाई-I आगम साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

Ans- आगम साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार है-

(1) शील, सदाचार और संयम का निरूपण

(2) आत्मा के प्रति आस्था और उसके शोधन की विभिन्न प्रक्रियाएँ।

(3) मानवता की प्रतिष्ठा के हेतु जातिभेद और वर्णभेद की निस्सारता।

(4) अपवर्ग-प्राप्ति के हेतु आहार-विहार की शुद्धि एवं स्व की आलोचना।

(5) साधनामार्ग के विवेचनार्थ अहिंसा, सत्य अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का निरूपण

(6) वैदिक क्रियाकाण्ड का वैचारिक विरोध।

(7) सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र की स्थापनाएँ और विवेचन

(8) आत्मशुद्धि के हेतु आलोचना, प्रतिक्रमण के साथ प्रायश्चित तथा तप-साधनाओं का विश्लेषण

(9) साहसिक, पारलौकिक यात्रा सम्बन्धी एवं धार्मिक आख्यानों द्वारा जीवन की अनेक दृष्टियों से व्याख्या।

(10) आचार की शुद्धि के लिए अहिंसा और विचार की शुद्धि के लिए स्याद्वाद सिद्धान्त का प्ररूपण

(11) राग-द्वेषादि संस्कारों को अनात्म भाव होने का सिद्धान्त

P.T.O

(12) अपने पुरुषार्थ पर विश्वास कर सर्वतोमुखी विशाल दृष्टि का विकास।

(13) अपने को स्वयं अपना भाग्यविधाता समझकर परोक्ष शक्ति का पल्ला छोड़ पुरुषार्थी में प्रवृत्त होने की प्रेरणा।

(14) मिथ्याभिमान छोड़कर उदारतापूर्वक विचार, सहिष्णु बन अपनी भूल को सहर्ष स्वीकार करने की प्रवृत्ति।

(15) तत्वज्ञान के चिन्तन द्वारा अहंभाव का उदंभाव के साथ सामञ्जस्य।

(16) विरोधी विचारों को महत्व देना तथा अपने विचारों के समान अन्य के विचारों का भी आदर करना।

(17) वैयक्तिक विकास के लिये हृदय की प्रवृत्ति से अनुभूतियों को विचार के लिए बुद्धि को समक्ष प्रस्तुत करना और बुद्धि द्वारा निर्णय हो जाने पर कार्य में प्रवृत्त होने का निर्देश।

(18) निर्भय और निर्वैर होकर शान्ति के साथ जीना और दूसरों को जीवित रहने देने की प्रवृत्ति।

(19) वासना, इच्छा और कामनाओं पर नियन्त्रण कर आत्मालोचन की ओर प्रवृत्ति।

(20) दया ममता करुणा आदि के उद्घाटन द्वारा

मानवता की प्रतिस्थापना।

(1) भौतिकवाद की मृगमरीचिका को आध्यात्मवाद की वास्तविकता द्वारा दूर करने की प्रवृत्ति।

(2) शोषित और शोषक में समता लाने के लिए आर्थिक विषमताओं में संतुलन उत्पन्न करने हेतु अपरिग्रहवाद और संयम को जीवन में उतारने की प्रवृत्ति।